अमर उजाला

उत्तराखंड के अगस्त्यमुनि और मनेरी में लोगों को सुरक्षित निकालते सेना के जवान। मौसम खराब होने पर बचने के लिए अब ऐसे ही दुर्गम रास्ते अंतिम विकल्प होंगे। (फोटो : पंकज गुप्ता, संदीप थपलियाल)

केदारघाटी से ज्यादातर लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया

50 किमी पैदल पथ बना रहे आईटीबीपी के 200 जवान बदरीनाथ के पास। इससे वहां फंसे लोगों को पैदल ही निकालने की तैयारी है क्योंकि मौसम बिगड़ने पर हेलीकॉप्टर अभियान थम सकता है।

5000 के करीब लोग अपनी गाड़ियों से गंतव्य के लिए निकले

4000 से ज्यादा लोग अब भी बदरीनाथ में फंसे हैं।

2000 लोग उत्तरकाशी जिले में अब भी फंसे हुए हैं

बचाव में जुटे जवानों की कड़ी परीक्षा का समय

जिंदगी की जंग जीतने का आखिरी रास्ता

खराब मौसम के बीच हजारों लोग बचाए गए मौसम विभाग ने दी भारी बारिश की चेतावनी

आज से सेना के 'सूर्य होप' अभियान का फेज थ्री, अब पैदल बचाने पर होगा पूरा जोर, वायुसेना के 45 विमान, हेलीकाप्टरों ने रविवार को 180 उड़ाने भर 2094 यात्रियों को निकाला

अमर उजाला ब्यूरो

देहरादून। उत्तराखंड के जख्मों पर रविवार को बारिश का पानी नमक बनकर गिरा। बारिश और बादल ने मुश्किल हालात में फंसे हजारों लोगों की मुश्किलें और बचाव में जुटे जवानों की चुनौतियां बढ़ा दी हैं। मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि मंगलवार सुबह तक भारी बारिश हो सकती है। इसके बाद भी कुछ दिन हल्की बारिश होती रहेगी। ऐसे में सोमवार को सेना अब फंसे लोगों को पैदल रास्तों से निकालने पर जोर देगी।

रविवार को देहरादून और रुद्रप्रयाग के गौरीकुंड में बारिश हुई। कई जगह धुंध और बादल छाए रहे। इससे हेलीकॉप्टर की उड़ानों में देरी हुई। खराब मौसम के बावजूद बचाव कार्य में जुटी सेना और वायुसेना ने हजारों फंसे यात्रियों को एयरलिफ्ट कर लिया है। सेना की स्पेशल फोर्स ने केदारघाटी के जंगलचट्टी और साथ लगते क्षेत्रों से सात दिन से फंसे लगभग हजार यात्रियों को सुरक्षित जगह पहुंचाया है। सोमवार से सेना 'सूर्य होप अभियान' का फेज थ्री शुरू कर रही है। इसके तहत सेना बेहद दुर्गम पैदल मार्गों से हर्षिल, गौरीकुंड और बदरीनाथ से लोगों को देहरादून, जोशीमठ और ऋषिकेश पहुंचाएगी। बारिश हुई तो केदारघाटी, उत्तरकाशी और चमोली जिले में खोली गईं सड़कों पर मलबा आने का खतरा होगा। इससे यहां फंसे यात्रियों और सेना की परेशानी बढ़ सकती है।

सरकार और सेना के मुताबिक केदारानाथ, गौरीकुंड, उत्तरकाशी, अगस्त्यमुनि से ज्यादातर लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचा दिया गया है लेकिन सौ लोग अब भी केदारनाथ मार्ग पर गौरीकुंड में फंसे हैं। उत्तराखंड सरकार के मुताबिक, कुल आठ हजार अब भी फंसे हुए हैं जबकि 14 हजार लोगों को डेंजर जोन से निकाला गया है। 1329 लोग केदारघाटी से निकाले गए, जिसमें से 979 को सेना ने निकाला है। 1200 यात्रियों को गुप्तकाशी से दून, ऋषिकेश, हरिद्वार भेजा गया है। वहीं, 1135 लोग चमोली जिले में गोविंदघाट से, 800 यात्री बदरीनाथ धाम से निकाले गए हैं। यमुनोत्री धाम में फंसे 700 यात्रियों को निकाला गया है। 450 लोग उत्तरकाशी जिले के हर्षिल से, 400 लोग मनेरी-भटवाड़ी से और 200 लोग जानकीचट्टी से निकाले गए। 5902 लोग रुद्रप्रयाग से निकाले जा चुके हैं।

8000
लोग अब भी फंसे हुए हैं मुख्य सचिव के मुताबिक। 22 हजार शनिवार तक फंसे बताए गए थे मुख्य सचिव की ओर से। शासन का दावा है कि शनिवार को सेना-प्रशासन ने लगभग 6200 लोगों को सुरक्षित निकाल कर गंतव्य की ओर भेज दिया है। जबकि लगभग 5000 लोग अपने-अपने वाहनों से निकले। बाकी लोग डेंजर जोन से निकालकर सुरक्षित जगह लाए गए हैं। उन्हें सोमवार को गंतव्य की ओर भेजा जाएगा। उधर सेना ने भी कहा है कि हम फंसे हुए लोगों को बचाने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं।

गोविंदघाट के दुर्गम इलाके से बच्चे को सुरक्षित ले जाता आईटीबीपी का जवान।

बचाव अभियान में बाधा

- रुद्रप्रयाग में मौसम खराब होने के चलते हवाई अभियान में देरी
- चमोली के गौचर हवाई पट्टी से चल रहा बचाव अभियान भी तीन घंटे देरी से शुरू हुआ
- करीब 12 बजे बदरीनाथ पहुंचा हेलीकॉप्टर, तीर्थयात्री भड़के।
- दून में बारिश-बादल के चलते उड़ान तीन से चार घंटे बाधित।

खराब मौसम से बचाव अभियान दिन में पांच से छह घंटे प्रभावित हुआ, लेकिन दोपहर बाद से हैलीकाप्टर सेवा शुरू हो गई।
- उत्तर भारत एरिया कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल एनएस बाबा

वायुसेना के इतिहास का सबसे बड़ा ऑपरेशन

उत्तराखंड में अब तक का सबसे बड़ा बचाव अभियान चला रही वायुसेना ने कहा है कि फंसे लोगों को निकालने में कम से कम एक हफ्ता और लग जाएगा। वह भी तब जब मौसम साथ दे। एयर कमोडोर राजेश इस्सर ने कहा कि वायुसेना के इतिहास में हेलीकॉप्टरों के जरिए किया जाने वाला यह सबसे बड़ा ऑपरेशन है। खराब मौसम से थोड़ी मुश्किल आ रही है। लेकिन हम तेजी से काम कर रहे हैं।

चुनौतियां और आशंकाएं

- बेहद दुर्गम स्थानों से खराब मौसम में लोगों को सुरक्षित निकालना सबसे बड़ी चुनौती
- सड़कें बंद होने के चलते पहाड़ी रास्तों से लाने में भारी खतरा
- बारिश की स्थिति में मलबे से रुकेगी राह, भूस्खलन का खतरा
- नदी, नाले में उफान की आशंका, इन्हें पार करना मुश्किल होगा
- फंसे लोगों में कई लोग बीमार, पैदल चलने की स्थिति में नहीं
- ऐसे लोगों को पीठ पर लादकर सुरक्षित स्थानों तक लाना होगा
- हर्षिल से उत्तरकाशी का लगभग 74 किलोमीटर का ट्रैक बेहद खराब हाल में है
- बारिश होने की स्थिति में यह मार्ग पूरी तरह से बंद हो सकता है
- बीआरओ के मजदूर और मशीनों को तेजी से करना होगा काम
- बारिश की स्थिति में जरूरत पड़ने पर नहीं उड़ पाएंगे हेलीकॉप्टर
- राहत सामग्री की सप्लाई पहुंचाने में बारिश डाल सकती है अड़ंगा

रुद्रप्रयाग पुलिस ने जारी की मिसिंग हेल्पलाइन

लापता चल रहे लोगों की जानकारी के रुद्रप्रयाग पुलिस ने मिसिंग हेल्पलाइन शुरू की है। लापता लोगों के नाम-पते और फोटो और अन्य जानकारियां उनके संबंधी फोन पर नोट करा सकते हैं। लापता लोगों का डाटा बैंक बनाया जाएगा। **ये हैं फोन नंबर-** 9411503538, 8755859365, 8006588740

मंत्री ने कहा- आपदा में कम से कम 5000 लोगों की मौत हुई

उत्तराखंड की तबाही में कम से कम 5000 लोगों की मौत हुई है। सबसे ज्यादा नुकसान केदारघाटी में हुआ है। **- यशपाल आर्य आपदा प्रबंधन मंत्री**

सरकार कराएगी हरिद्वार में महायज्ञ

आपदा के 13वें दिन इस तबाही में मारे गए लोगों की आत्मा की शांति के लिए हरिद्वार में महायज्ञ किया जाएगा। केंद्रीय गृह मंत्री सुशील शिंदे और मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा से शनिवार को मुलाकात में साधु-संतों ने महायज्ञ कराने की सलाह दी थी।

देखें पेज-17,18,20